ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)

बुलेटिन संख्या-६२
दिनांक-शुक्रवार,२१ दिसम्बर,२०१८

टेलीफोन -०६२७४-२४०२६६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २२.० एवं ६.० डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ६१ सुबह में एवं दोपहर में ६१ प्रतिशत, हवा की औसत गति १.६ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ५.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १३.८ एवं दोपहर में २०.८ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा, सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२२ से २६ दिसम्बर, २०१८)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २२ से २६ दिसम्बर,२०१८ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान २२ से २४ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान सामान्य से १ से २ डिग्री सेल्सियस गिरावट के साथ यह ७ से ६ डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। रात्री एवं सुबह में कुहासा छा सकता है।
- औसतन १० से १५ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ८५ से ६५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५५ से ६५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- चना की फसल में चना की सुंडी की निगरानी करें। इस कीट से फसल को काफी हानी होती है। शुरु में यह सुंडी चने की पत्तियों एवं कोमल टहनीयों को क्षती पहुँचाती है। फलिया आ जाने पर सुंडी फलों में छेद कर घुस जाती है तथा अन्दर ही अन्दर दाने को खाती रहती है। फलियाँ खोखला हो जाने पर दुसरे स्वस्थ फलियों को खाती है। खेत में इसे चने के फलियों में आधी अन्दर तथा आधी बाहर की ओर लटका देखा जा सकता है। अत्यधिक प्रक्रोप की स्थिती में प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.५ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से ६०० से ८०० लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।
- पहली सिंचाई के बाद गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। यह गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई २५ दिसम्बर से पहले किसान समपन्न कर लें। *पी०बी०डब्लू० ३७३, एच०डी० २२८५, एच०डी० २६४३, एच०यू०डब्लू० २३४, डब्लू०आर० ५४४, डी०बी०डब्लू० १४, एन०डब्लू० २०३६, एच०डी० २६६७ तथा एच०डब्लू० २०४५* किस्में इस क्षेत्र के लिए अनुशसित हैं। गेहुँ की जो फसल २१-२५ दिनों की हो गई हो, में सिंचाई कर प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- अगात मक्का की फसल जो ५० से ५५ दिनों की हो गयी हो, उसमें सिचाई कर ५० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ा दे।
- आलू की फसल में निकौनी एवं आवश्यकतानुसार १०-१५ दिनों के अन्तराल में सिंचाई करें। आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें।
- प्याज की रोपाई पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर करे। प्याज की खेत की तैयारी में १५ से २० टन गोबर की खाद, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ८० किलोग्राम फॉसफोरस, ८० किलोग्राम पोटास तथा ४० किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करें।
- सब्जियों में निकाई-गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। कीट-व्याधी की निगरानी करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- मशरूम की बृद्धि पर गिरते तापमान का कुप्रभाव पड़ सकता, उत्पादन गृह में तापक्रम २५ से २८ डिग्री सेल्सियस बनाये रखें।
- पशुओ को रात में खुले स्थान पर नहीं रखें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें। दुधारु पशुओं को लिवरफ्लूक संक्रमण से वचाव हेतु धान का पुआल नहीं खिलावें। अगर पशुओं मे दस्त, निचले जबड़े में सुजन जैसी लक्षण दिखाई दे तो ट्राकाबेन्डाजोल दवा खिलाएँ।
- निम्न तापमान के कारण दुधारु पशुओं के दुध में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से दाने एवं कैल्सियम खिलाये।

आज का अधिकतम तापमानः २२.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.८ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ८.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.७ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी